४५८२

श्री

जैन सज्झाय संग्रह पुस्तक

ओ पुस्तक

जैन धर्मी श्रावक लोकांने
भणवा वाचवाने अर्थें
योग्य जाणीनें

नाना दादाजी गुंड इणनें.

"सौजन्यमित्र" छापखाना माहे छपायोछे

संमत १९४७

ओ पुस्तक पुना पेठ नानाकी आठें भाई
भगवानदासजी केशरचंदजी नाहार
की दुकान उपर मीलसी.

किंमत अधीच आना

४५८

॥ अथ श्री जैन सज्झाय संग्रह प्रारंभः ॥

॥ अथ राजा अने मंत्रीनी सज्झाय लिख्यते ॥

राम कहो सुजस घणो ॥ ए देशी ॥ मंत्री केवे महिपत सुणो रे, गीत सहु विलापात ॥ स्वाद नही सुणीयां थकां रे, विकल रीजे इण वात ॥ महिपति सांभलो रे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ नाटक छे सहु विटंबणा रे, आभरण सघलां भार ॥ काम भोगथकी दुःख उपजे रे, दुर्गति तणां दातार ॥ म० ॥ २ ॥ तन धन जोबन कारिमुं रे, कारमी कोमल काय ॥ संपत सपना सारिखी रे, जावे वादल जेम विलाय ॥ म० ॥ ३ ॥ जेवो रंग पतंगनोरे, एवुं छे कामनी रूप ॥ ए रूप में राच्या थकां रे, जाइ पडे अंधकूप ॥ म० ॥ ४ ॥ भोग जाणो विष सारिखा रे, जेवुं फल किंपाक ॥ प्यारा लागे भोगवतां थकां रे, उगंतो जेम आक ॥ म० ॥ ५ ॥ सुखतो सरशव सारिखारे, दुःख छे मेरु समान ॥ एवां वचन वीतरागनां रे, तिणमें शंका मत जाण ॥ म० ॥ ६ ॥ कहि कहिने केतरो कहुं रे, काम भोग दुखारी खाण ॥

तिणशुं भ्रमण करे संसारमें रे, पडे मुगत सुखा री हाण ॥ म० ॥ ७ ॥ राज भोगवीयां नरकछे रे, राज छोड्याशुं सुख जाण ॥ ॥ संयम पाल्यां शिवगति मिले रे, तिणमें शंका मत आण ॥ म० ॥ ॥ ८ ॥ राय केवे मंत्री भणी रे, तुं मत ले वैरा गरो नाम ॥ भोगविचाले कांइ भाखियो रे, अ ठे वैरागरो कांइ काम ॥ म०॥९ ॥ अकलवंत तुं मं त्रवी रे, भोली भोली करे वात ॥ इण अवसर तुं मो भणी रे, कीधी भोग तणी व्याघात ॥ म० ॥ ॥ १० ॥ मंत्री कहेवे राजा भणी रे, में अवसर जाण्यो आज ॥ अवसाण आव्यो छे आपरोरे, सांभलजो माहाराज ॥ म० ॥ ११ ॥ राजा केवें मंत्री भणी रे. अवसर जाण्यो केम ॥ वैराग भा ख्या मो भणी रे, उ अचरिज छे एम ॥ म०॥१२॥ मंत्री कहेवे हाथ जोमीनरे, सांभलजो पृथिवी ना थ ॥ मुज आगें मुनिवर कह्यो रे, आगम व्य वहारी साक्षात ॥ म० ॥ १३ ॥ जंघाचारण साधु जी रे, हुं बेठो थो तिण पास ॥ महाबलनुं बाकी रह्युंरे, आऊखुं एक मास ॥ म० ॥ १४ ॥ मरण नेमे आयो तुम भणी रे, चेतोने श्रुत संभाल ॥

इण कारण वैराग भाखीयोरे, इणरी ढील न करणी लिगार ॥ म० ॥ १५ ॥ भोग छोडो विष सारिखारे, आप लेवो संयमभार ॥ हुं भलो वंछुं छुं आपरो रे, शंका मत आणो लिगार ॥ म० ॥ १६ ॥ वचन सुणी राय हरपीयोरे, चमक्यो चित्त मोझार ॥ हुं करुं कल्याण इण जीवरा रे, जे जन करणी लिगार ॥ म० ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ अथ मान त्याग सज्झाय लिख्यते ॥

चतुर सनेही चेतन चेतियें रे, मूकतुं माया जाल ॥ सुंदर तनु भोसा ए कारमीरे, सरवाले विंसराल ॥ १ ॥ अकल अरूपी अविगत आतमां रे, शांति सुधारस चाख ॥ विषय तणे सुरंगें फूलडें रे ॥ अडतो मन अली राख ॥ अ० ॥ २ ॥ स्वारथने वस सहु अवी मिले रे, स्वारथ सुधी प्रीत ॥ विण स्वारथ जग वालुं को नही रे, ए संसारनी रीत ॥ अ० ॥ ३ ॥ आदर समता ममता मेलीने रे, धर तुं धर्मशुं रंग ॥ चंचल वीज तणी परें जाणीयें रे, कारमो ए सही संग ॥ अ० ॥ ४ ॥ वालुं वैरी को नही ताहरे रे, जूठो रागने रोश ॥ पंच दिवसनो तुंछे प्राहूणो रे, तो श्यो एवडो शोष

॥अ०॥ ५ ॥जेह नर मूछे वल घालता रे, करता होडाहोड ॥ ते ऊठी समशाने संचरयारे, काज अधूरां छेड ॥ अ० ॥ ६ ॥ रावण जेहवो जोजो राजवी रे, लंका सरिखो कोट ॥ ते पण रूठे करमें रोलव्यो रे, श्री रामचंद्रनी चोट ॥ अ० ॥ ७ ॥ मूंज सरिखे मांगी भीखडी रे, राम रह्या वनवास ॥ एह संसारें धन सुख संपदा रे, संध्याराग विलास ॥ अ० ॥ ८ ॥ राजलीला संसारनी साहेबीरे, ए यौवन रंग रोल ॥ आठे मद तुं जाणे कारमां रे, जेहवा जल कल्लोल ॥ अ० ॥ ९ ॥ किहांथी आव्यो किहां जावुं छेरे, किहां ताहारी उतपत्त ॥ भूलें भमे तुं अथिर पदारथेंरे, चतुर विचारी जो चित्त ॥ अ० ॥ १० ॥ मोहतणे वस दुःख दीठा घणारे, संग न कर हिवे तास ॥ उदयरतन कहे चतुर तुं आतमारे, भज भगवंत उल्लास ॥ अ०॥ ११॥

॥ अथ वणझारानी सज्झाय लिख्यते ॥

नरभव नयर सोहामणुं ॥ वणझारारे ॥ पामीने करजे व्यापार ॥ अहो मोरा नायकरे ॥ सत्तावण संबर तणी ॥ व० ॥ पोठी भरजे उदार

॥ अ० ॥१॥ शुभ परिणाम विचित्रता ॥ व० ॥
॥ किरियाणा बहु मूल ॥ अ० ॥ मोक्ष नगर जा
वा भणी ॥ व० ॥ करजे चित्त अनुकूल ॥ अ०॥
॥ २ ॥ क्रोध दावानल ओलवे ॥ व० ॥ मान
विषम गिरिराज ॥ अ० ॥ उलंघजे हलवे करी
॥ व० ॥ सावधान करे काज ॥ अ० ॥ ३ ॥ वं
शजाल माया तणी ॥ व० ॥ नवि करजे विश
राम ॥ अ० ॥ खामी मनोरथ भट तणी ॥ व० ॥
॥ पूरणनुं नहीं काम ॥ अ० ॥ ४ ॥ राग द्वेष
दोय चोरटा ॥ व० ॥ वाटमां करशे हैरान ॥
अ० ॥ विविध वीर्य उल्लासथी ॥ व० ॥ ते हण
जेरे ठाय ॥ अ० ॥ ५ ॥ एम सावि विघन वि
दारीने ॥ ब० ॥ पहोंचजे शिवपुर वास ॥ अ०
॥ खय उपशमजे भावना ॥ व० ॥ पोठें भरया
गुण राश ॥ अ० ॥ ६ ॥ खाएक भावें ते थशे
॥ व० ॥ लाभ होशे ते अपार ॥ अ० ॥ उत्तम वण
ज जे एम करे ॥ व० ॥ पद्म नमे वारंवार ॥ अ० ॥७॥

॥ अथ सोदागरनी सज्झाय लिख्यते ॥

सुण सोदागर वे, दिलकी बात हमेरी ॥ तें
सोदागर दूर विदेशी, सोदा करनकुं आया ॥

मोसम आये माल सवाया, रतन पुरीमां ठाया ॥ सु० ॥ १ ॥ तिनुं दलालकुं हर समझाया, जिनसें बहोत नफापाया॥ पांचुं दीवानुं पाउं जडाया, एककुं चोकी बिठाया ॥ सु० ॥ २ ॥ नफा देख कर माल विहरणां, चुआ कटे न युं धरनां ॥दोनुं दगाबाजी दूरकरनां, दीपकी ज्योतें फिरनां ॥ सु० ॥ ३ ॥ ओर दिन वली मेहेलमें रहनां, बंदरकुं न हलानां ॥ दश सहेरसें दोस्तिाईं करनां, उनसें चित्त मिलानां॥ सु० ॥ ४॥ जनहर तजनां जिनवर ज्ञजनां, सजना जिनकुं दलाइ ॥ नवसर हार गलेमें रखनां, जखनां लखकी कटाइ ॥ सु० ॥ ५ ॥ शिरपर मुगट चमर ढोलाइ, अम घर रंग वधाइ ॥ श्री शुज्ञवीर विजय घरजाइ, होत सतावी सगाइ ॥ सुण० ॥ ६ ॥

॥ अथ आप स्वज्ञावनी सज्झाय लिख्यते ॥

आप स्वज्ञावमां रे, अवधू सदा मगनमें रहना ॥ जगत जीवहे करमाधीना, अचरिज कछुअन लीना ॥ आ० ॥ १ ॥ तुं नहीं केरा कोइ नहीं तेरा, क्या करे मेरा मेरा ॥ तेरा हेसो तेरी पास, अवर सबी अनेरा ॥ आ० ॥ २ ॥

वपु विनाशी तुं अविनाशी, अबहे इनकुं विला
सी ॥ वपु संघजब दूर निकासी, तब तुम शिव
का वासी ॥ आ० ॥ ३ ॥ रागने रीसा दोय ख
वीसा, ए तुम दुःखका दीसा ॥ जब तुम उनकुं
दूर करीसा, तब तुम जगका इसा ॥आ०॥४॥
परकी आसा सदा निरासा, एहे जग जन पासा ॥
ते काटनकुं करो अभ्यासा, लहो सदा सुख वासा
॥ आ०॥५॥ कबहींक काजी कबहींक पाजी, कबहीं
क हुआ अपभ्राजी ॥कबहींक जगमें कीर्ति गाजी,
सब पुदगलकी बाजी ॥ आ० ॥ ६ ॥ शुद्ध उ
पयोग ने समता धारी, ज्ञान ध्यान मनोहारी
॥ कर्म कलंककुं दूर निवारी, जीव वरे शिव
नारी ॥ आप० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ चेतन शिखामणनी सज्झाय लिख्यते ॥

चेतन अब कछु चेतीयें, ज्ञान नयन उघाडी
॥ समता सहजपणुं भजो, तजो ममता नारी ॥
चे० ॥ १ ॥ या दुनीयां हे बाउरी, जेसी बाजी
गर बाजी ॥ साथ किसीके ना चले, ज्युं कुलटा ना
री ॥ चे० ॥ २ ॥ माया तरुछाया परें, न रहे
थिरकारी ॥ जानतहे दिलमें जनी, पण करत

बिगारी ॥ चे० ॥ ३ ॥ मेरी मेरी तुं क्या करे, करे कोणशुं यारी ॥ पलटे एकण पलकमें, ज्युं घन अंधीयारी ॥ चे० ॥ ४ ॥ परमातम अविचल भजो, चिदानंद आकारी ॥ नय कहे नियत सदा करो, सबजन सुखकारी ॥ चे० ॥ ५ ॥

॥ अथ आत्म बोधनी सज्झाय लिख्यते ॥

हो सुण आतमा मत पड, मोह पंजर मांहे ॥ माया जालरे ॥ धन राज्य जोबन रूप रामा, सुत सुता घरबाररे ॥ हुकम होदा हाथी घोडा, कारिमो परिवार ॥ माया जालरे ॥ हो० ॥ १ ॥ अतुलबल हरि चक्री रामा, तुं जो गर्जित मदमत्त रे ॥ क्रूर जमबल निकट आवे, गलित जावे सत्त ॥ माया ० ॥ हो० ॥ २ ॥ पुहवीने जे छत्र परें करे, मेरुनो करे दंडरे ॥ ते पण गया हाथ घसता, मूकी सर्व अखंड ॥ मा० ॥ हो० ॥ ३ ॥ जे तखत बेसी हुकम करता, पेहेरी नवला वेश रे ॥ पाघ सेहेरा धरत टेढा, मरीगया जमदेश ॥ ॥ मा० ॥ हो० ॥४॥ मुख तंबोलने अधर राता, करत नव नव खेलरे ॥ तेहनर बल पुण्य घाठे, करत परघरटेल ॥ मा० ॥ हो० ॥ ५ ॥ भज स

दा नगवंत चेतन, सेव गुरु पदपद्मरे ॥ रूप कहे क
रो धर्मकरणी, पामे शाश्वत सद्म ॥ मा० ॥ हो० ॥५॥

॥ अथ सांनल सयणानी सज्झाय लिख्यते ॥

सांनल सयणा साची सुणावुं, पूरव पुण्ये तुं
पाम्योरे नाइ ॥ नरक निगोदमां नमतां नरन
व, तें निःफल केम वाम्योरे नाइ ॥ सां० ॥ १॥
जैनधर्म जयवंतो जगमां, धारी धर्म न साध्योरे
नाइ ॥ मेघघटा सरिखा गज साटे, गर्दन घर
मां बांध्योरे नाइ ॥ सां० ॥ २ ॥ कल्पवृक्ष कू
हाडे कापी, धतुरो घेर धारेरे नाइ ॥ चिंताम
णि चिंतित पूरणते, काग नडाडण डारेरे नाइ
॥ सां० ॥ ३ ॥ एम जाणी जावा नवि दीजें,
नरनारी नर नवनेंरे नाइ ॥ नलखी शुद्ध धर्म
ने साधो, जे मान्यो मुनि मननेंरे नाइ ॥ सां०
॥ ४ ॥ जे विनाव परनावमां नजीयें, रमण स्व
नावमां करीयें रे नाइ ॥ उत्तम पद पद्मने अव
लंबी, नवियण नवजल तरियेंरे नाइ ॥ सां० ॥५॥

॥ अथ श्री नेम राजुलनी सज्झाय लिख्यते ॥

पिनजी पिनजी रे नाम, जपु दिन रातियां
॥ पिनजी चाल्या परदेश, तपे मोरी गतीयां ॥

पग पग जोतीं वाट, वालेसर कब मिले ॥ नीर विछोया मीन, के ते ज्युं टलवले ॥ १ ॥ सुंदर मंदिर सेज, साहिब विण नवि गमे ॥ जिहां रे वालेसर नेम, तिहां मारुं मन जमे ॥ जो होवे सज्जन दूर, तोही पासें वसे ॥ किहां पंकज किहां चंद, देखी मन उल्लसे ॥ २ ॥ निःस्नेहीशुं प्रीत, म करजो को सही ॥ पतंग जलावे देह, दीपक मनमें नही ॥ वाहाला माणसनो विजोग, म होजो केहनें ॥ साले रे साल समान, हियडा मां तेहने ॥ ३ ॥ विरह व्यथानी पीड, जोबन वय अति दहे ॥ जेनो पीयु परदेश, ते माणस दुःख सहे ॥ झुरी झुरी पंजर कीध, काया कमलज जसी ॥ हजिअ न आव्यो नेम, मिलि न नयणें हसी ॥ ४ ॥ जेने जेहशुं राग, टाल्यो ते नवि टले ॥ चकवा रयणी विजोग, ते तो दिवसें मिले ॥ आंबा केरो स्वाद, लिंबु ते नवि करे ॥ जे नाह्या गंगा नीर. ते छिल्लर किम तरे ॥ ॥ ५ ॥ जे रम्या मालती फूल, धतूरे किम रमे ॥ जेहने घृत शुं प्रेम ते, तेले किम जिमे ॥ जेहने चतुरशुं नेह ते, अवर नें शुं करे ॥ नव जो

बन तजी नेम, वैरागी थइ फिरे ॥ ६ ॥ राजुल रूप निधान, पोह्होती सहसावनें ॥ जइ वांद्या प्रभु नेम, संजम लेइ एकमनें ॥ पाम्यां केवल ज्ञान के, पोती मननी रुली ॥ रूपविजय प्रभु नेम, भेटे आशा फली ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ रात्रिभोजननी सज्झाय लिख्यते ॥

पुण्य संजोगें नरभव लाधो, साधो आतम काज ॥ विषया रस जाणो विष सरिखो, एम भाखे जिनराजरे ॥ प्राणी ॥ रात्रिभोजन वारो ॥ आगम वाणी साची जाणी, समकित गुण सही नाणीरे प्राणी ॥ रात्रि० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ अभक्ष बावीशमां रयणीभोजन, दोष कह्या परधान ॥ तेणें कारण रातें मत जिमजो, जो हुवे हियमे शानरे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ दान स्नान आयुधने भोजन, एटलां रातें न कीजें ॥ ए करवां सूरजनी साखें, नीतिवचन समजीजेंरे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ उत्तम पशु पंखी पण रातें, टाले भोजन टाणो ॥ तुमें तो मानवी नाम धरावो, केम संतोष न आणोरे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ माखी जू कीडी कोलीआवडो, भोजनमां जो आवे ॥ कोढ जलोदर वमन

विकलता, एवा रोग उपावेरे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ भनुं भव जीवहत्या करतां, पातक जेह उपायुं ॥ एक तलाव फोमतां तेटलुं, दूषण सुगुरु बतायुंरे ॥ ॥ प्रा०॥६॥ एकलोत्तर भव सर फोड्या सम, एक दव देतां पाप ॥ अठलोत्तर भव दव दीधा जिम, एक कुवणिज संतापरे ॥प्रा०॥७॥ एक शो चुम्मा लीश भव लगें कीधां, कुवणिजना जे दोष ॥ कूडुं एक कलंक दियतां, तेहवो पापनो पोषरे ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ एकशो एकावन भव लगें दीधां, कूडां कलंक अपार ॥ ते तेवुंरे एक शीयल खंड्यामां, दोष कह्यो निरधाररे ॥ प्रा० ॥ ९ ॥ एक शो नवाणुं भव लगें खंड्या, शीयल विषय संबंध ॥ तेहवो एक रात्रिभोजनमां, कर्म निकाचित बंधरे ॥ प्रा० ॥ १० ॥ रात्रिभोजनमां दोष घणा छे, कहेतां नावे पार ॥ केवली केहतां पार न पावे, पूरव कोमी मझाररे ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ एवुं जाणीनें उत्तम प्राणी, नित्य चोविहार करजिं ॥ मासें मासें पोसखमणनो, लाभ इणें विधें लीजेंरे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ मुनि वसतानी एह शिखामण, जे पाले नरनारी ॥ सुर नर सुख विलसीनें होवे,

मोक्ष तणा अधिकारीरे ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ निंदावारक सज्झाय लिख्यते ॥

निंदा म करजो कोइनी पारकीरे, निंदानां बोल्या महा पापरे ॥ वयर विरोध वाधे घणोरे, निंदा करतो न गणे माय बापरे ॥ निं०॥ १ ॥ दूर बलंती कां देखो तुम्हेंरे, पगमां बलंती दे खो सहु कोयरे ॥ परना मलमां धोयां लुगडांरे, कहो केम ऊजलां होयरे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप सं भालो सहुको आपणोरे, निंदानी मूको पडी टे वरे ॥ थोडे घणे अवगुणें सहु भरयारे, केहनां नलीयां चुंए केहेनां नेवरे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते थाये नारकीरे, तप जप कीधुं सहु जा यरे ॥ निंदा करो तो करजो आपणीरे, जेम छु टकबारो थायरे ॥ निं० ॥४॥ गुण ग्रहजो सहु को तणारे, जेहमां देखो एक विचाररे ॥ कृष्ण परें सुख पामशोरे, समय सुंदर सुखकाररे ॥ निं०॥५॥

॥ अथ क्रोधनी सज्झाय लिख्यते ॥

कडुवां फल छे क्रोधनां, ज्ञानी एम बोले ॥ रीशतणो रस जाणीयें, हलाहल तोलें ॥ क० ॥ ॥ १ ॥ क्रोधें क्रोड पूरव तणुं, संजम फल

जाय ॥ क्रोध सहित तप जे करे, ते तो लेखें न थाय ॥ क० ॥ २ ॥ साधु घणो तपीयो हुतो, धरतो मन वैराग ॥ शिष्यने क्रोध थकी थयो, चंडकोशीयो नाग ॥ क० ॥ ३ ॥ आग उठे जे घरथकी, पहेलुं ते घर बाले ॥ जलनो जोग जो नवि मिले, तो पासेंनुं परजाले ॥ क० ॥४॥ क्रोधतणी गति एहवी, कहे केवलनाणी ॥ हाण करे जे हेतनी, जालवजो एम जाणी ॥ क० ॥५॥ उदयरतन कहे क्रोधने, काढजो गले साही ॥ काया करजो निरमली, उपशम रस नाही ॥ क० ॥६॥

॥ अथ माननी सज्झाय लिख्यते ॥

रे जीव मान न कीजीयें, मानें विनय न आवेरे ॥ विनय विना विद्या नहीं, तो किम समकित पावेरे ॥ रे० ॥ १ ॥ समकित विण चारित्र नहीं, चारित्र विण नहीं मुक्तिरे ॥ मुक्तिनां सुख छे शाश्वतां, ते केम लहियें जु मुक्तिरे ॥ रे० ॥ २ ॥ विनय वडो संसारमां, गुणमां अधिकारीरे ॥ मानें गुण जाये गली, प्राणी जो जो विचारीरे ॥ रे० ॥ ३ ॥ मान करयुं जो रावणें, ते तो रामें मारयोरे ॥ दुर्योधन गरवें करी, अंतें सवि हारयोरे

॥ रे० ॥ ४ ॥ शूकां लाकडां सारिखो. दुःखदा
यी ए खोटोरे ॥ उदयरत्न कहे माननें, देजो
देशवटोरे ॥ रे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ मायानी सज्झाय लिख्यते ॥

समकितनुं मूळ जाणीयें जी, सत्य वचन सा
क्षात ॥ साचमां समकित वसे जी, कुडामां मि
थ्यात्वरे ॥ प्राणी म करीश माया लगार ॥ १॥
ए आंकणी ॥ मुख मीठो जूठो मनें जी, कूड
कपटनो रे कोट ॥ जीभे तो जी जी करे जी चि
त्तमां हे तांकें चोट रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ आप गर
जें आघो पडे जी, पण न धरे विश्वास ॥ मन
शुं राखे आंतरो जी, ए मायानो पासरे ॥प्रा०
॥ ३ ॥ जेहशुं बांधे प्रीतडी जी, तेहशुं रहे प्र
तिकूल ॥ मेल न छंडे मन तणो जी, ए माया
नुं मूलरे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ तप किधुं माया करी
जी, मित्रशुं राख्योरे भेद ॥ मल्ली जिनेश्वर जा
णजो जी, तो पाम्या स्त्री वेदरे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥
उदयरत्न कहे सांभलो जी, मेलो मायानी बुद्ध
॥मुक्ति पुरी जावा तणो जी, ए मारगछे
शुद्ध रे ॥ प्राणी० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ लोभनीं सज्झाय लिख्यते ॥

तुमें लक्षण जो जो लोभनां रे, लोभे जन पामे क्षोभनां रे ॥ लोभे डाह्या मन डोल्या करे रे, लोभे दुर्घट पंथेंसंचरे रे ॥ तु० ॥ १ ॥ तजे लोभ तेहनां लेउं भामणांरे, वली पायें नमीने करुं खामणां रे ॥ लोभें मरजादा न रहे केहनी रे, तुमें संगत मेलो तेहनी रे ॥ तु० ॥ २ ॥ लोभें घर मेहेली रणमां मरे रे, लोभे उंच ते नीचुं आचरेरे ॥ लोभे पाप भणी पगलां भरेरे, लोभे अकारज करतां न उसरे रे ॥ तु० ॥ ३ ॥ लोभे मनडुं न रहे निर्मलुं रे, लोभे सगपण नासे वेगलुं रे॥लोभे न रहे प्रीतिने पावठुं रे,लोभे ध न मेले बहु एकठुंरे ॥ तु० ॥ ४ ॥ लोभे पुत्र प्रत्यें पिता हणे रे, लोभे हत्या पातक नवि गणे रे ॥ ते तो दाम तणे लोभे करीरे, उपर मणिधर थायें ते मरी रे ॥ तु० ॥ ५ ॥ जोतां लोभनो थोभ दिसे नही रे, एवुं सूत्र सिद्धांतें कह्युं सही रे ॥ लोभे चक्री संभुम नामें जुउ रे, तेतो समुद्र मांहे डूबी मुवो रे ॥ तु० ॥ ६ ॥ एम जाणीने लोभने थंभजो रे, एक धर्मशुं ममता

मंडजो रे ॥कवि उदयरत्न नाखे मुदारे, वंदूं लोन तजे तेहने सदा रे ॥ तुमें० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ दान विषे सज्झाय लिख्यते ॥

चोत्रीश अतिशयवंत, समवसरणें हो बेसी जग गुरु ॥ उपदेशे अरिहंत, दानतणा गुण हो पहेले सुख करु ॥ १ ॥ दान दोलत दातार, दाने नाजे हो नवनुं आमलो ॥ दानना पांच प्रकार, उलट आणी हो नवियण सांनलो ॥ २ ॥ पहेलुं अनय सुदान, दया हेतें हो निज तनुं दीजीयें ॥ जिम मेघरथ राजन्न, जीव सहुने हो निर्नय कीजीयें ॥ ३ ॥ बिजुं दान सुपात्र, तृण मणि कंचण हो, अदत्त जे परिहरे ॥ निर्मल व्रत गुण गात्र, सत्तर नेदे हो, संयम जे धरे ॥४॥ आहारादिक सुविचार, तेहने दीजें हो, हाजर जे हुवे, जिम शालिनद्र कुमार, सुपात्र दानें हो महा सुख नोगवे ॥ ५ ॥ अनुकंपादान विशेष, त्रीजुं देता हो, पात्र न जोइयें ॥ अन्ननो अर्थी देखी, तेहने आपी हो, पुण्यवंत होइयें ॥ ६ ॥ धन पामी ससनेह, कारण पांखे हो, न्यात जे पोषीयें ॥ उचित्त चोथुं ए स्वजन, कुटुंब सहेजे

हो, जे संतोषीयें ॥ ७ ॥ पांचमुं कीर्त्तिदान, जा
चक जनने हो, जे कांइ आपीयें ॥ तेणें वाधे
जस वान, जगमां सघले हो, जलपण थापीयें॥
॥ ८ ॥ पामें चिंतावित पात्र, जेहथी प्राणी हो,
निर्मल सुख लहे ॥ दान देतां क्षण मात्र, वि
लंब न कीजे हो, उदयरतन कहे ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ शीयल स्वाध्याय लिख्यते ॥

शीयल समुं व्रत को नहीं, श्रीजिनवर जा
खे रे ॥ सुख आपे जे शाश्वतां, दुर्गति पडता
ने राखेरे ॥ शी० ॥ १ ॥ व्रत पच्चखाण विना
जुउ, नव नारद जेहरे ॥ एकज शीयल तणे ब
लें, गया मुक्तें तेहरे ॥ शी० ॥ २ ॥ साधु अने
श्रावक तणा, व्रत छे सुखदाइरे ॥ शीयल वि
ना व्रत जाणजो, कुसका सम जाइरे ॥ शी० ॥
॥ ३ ॥ तरूवर मूल विना जिश्यो, गुणविण ला
ल कमान रे ॥ शीयल विना व्रत एहवुं, कहे वी
र जगवान रे ॥ शी० ॥ ४ ॥ नवे वाडें निर्मलुं,
पहेलुं शीलज धरजो रे ॥ उदयरत्न कहे ते पछी,
व्रतनो खप करजो रे ॥ शीयल० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ तप सज्झाय लिख्यते ॥

कीधां कर्म निकंदवारे, लेवा मुक्ति निदान॥
हत्या पातक छूटवारे, नहीं कोइ तप समान ॥
भविक जन, तप सरिखुं नहीं कोय ॥१॥ उत्तम
तपना योगथीरे, सुर नर सेवे पाय ॥ लब्धि
अठावीश उपजेरे, मन वांछित फल थाय ॥
भवि० ॥ तप०॥२॥ तीर्थंकर पद पामीयेंरे, नासे
सगला रोग ॥ रूप लीला सुख साहेबी रे, लही
यें तप संयोग ॥ भवि० ॥ ३ ॥ अष्ट करमना
उघने रे, तप टाले ततकाल ॥ अवसर लहीने
तेहनो रे, खप करजो उजमाल ॥ भवि० ॥ त
प० ॥ ४ ॥ ते शुं छे संसारमां रे, तपथी न हो
वे जेह ॥ मनमां जे जे कामियें रे, सफल फले
सही तेह ॥ भवि० ॥ तप० ॥ ५ ॥ बाह्य अ
भ्यंतर जे कह्यो रे, तपना बारे प्रकार ॥ होजो
तेहनी चालमां रे, जिम धनो अणगार॥ भवि०
॥ तप० ॥ ६ ॥ उदयरत्न कहे तप थकीरे, वा
धे सुजस सनूर ॥ स्वर्ग होये घर आंगणुं रे, दु
र्गति नासे दूर ॥ भवि० ॥ तप० ॥ ७ ॥इति॥

॥ अथ भाव सज्झाय लिख्यते ॥

रे भवि भाव हृदय धरो, जे छे धर्मनो धो

री ॥ एकल मल्ल अखंम जे, कापे कर्मनी दोरी ॥ रे ज्नवि० ॥ १ ॥ दान शीयल तप त्रण ए, पातक मल धोवे ॥ ज्नाव जो चोथो नवि हुवे, तो निष्फल होवे ॥ रे ज्नवि० ॥ २ ॥ वेद पुराण सिद्धांतमां, षटदर्शन ज्नाखे ॥ ज्नाव विना ज्नव संतति, पमतां कोण राखे ॥ रे ज्नवि० ॥ ३ ॥ तारक रूप ए विश्वमां, जंपे जग ज्नाण ॥ नरतादिक शुज्न ज्नावथी, पाम्या पद निरवाण ॥ रे ज्नवि० ॥४॥ औषध आय उपाय जे, मंत्र यंत्र ने मूली ॥ ज्नावें सिद्ध होवे सदा, ज्नावविण सहु धूली ॥ रे ज्नवि० ॥ ५ ॥ उदयरत्न कहे ज्नावथी, कुण कुण नर तरिया ॥ शोधी जो जो सूत्रमां, सज्जन गुण दरिया ॥ रे ज्नवि० ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशिनी सज्जाय लिख्यते ॥

आज म्हारे एकादशीरे, नणदल मौन करी मुख रहियें ॥ पुछयानो पडूत्तर पाछो, केह्नने कांइ न कहियें ॥ आ० ॥१॥ माहारो नणदोइ तुजनेवाल्हो, मुजने ताहारो वीरो ॥ धूआडाना बाचका ज्नरतां, हाथ न आवे हीरो ॥ आ० ॥ ॥ २ ॥ घरनो धंधो घणो कस्यो पण, एक न

आव्यो आमो ॥ परभव जातां पालव झाले, ते मुजने देखाडो ॥ आ० ॥ ३ ॥ मिंगशर सुदि इगिआरस महोटी, नेवुं जिनना निरखो ॥ दो होढशो कल्याणक महोढा, पोथी जोइने हरखो ॥ आ० ॥ ४ ॥ सुव्रत शेठ थयो सुद्ध श्रावक, मौन धरी मुख रहीउ ॥ पावक पूर सघलो पर जाल्यो, एहनो कांई न दहीउ ॥ आ० ॥ ५ ॥ आठ पहोर पोसा ते करियें, ध्यान प्रजुनुं धरियें ॥ मन बच काया जो वस करियें, तो जव सायर तरियें ॥ आ० ॥ ६ ॥ इर्या समिति जाषा न बोले, आडो अवलो पेखे ॥ पडिक्कमणासुं प्रेम न राखे, कहो केम लागे लेखे ॥ आ० ॥ ७ ॥ कर उपर तो माला फिरती, जीव फिरे मन मांही ॥ चित्तडो तो चिहुंदिस डोले, इणे जजने सुख नाही ॥ आ० ॥ ८ ॥ पौषध सालें जेगा थइने, चार कथा वली सांधे ॥ कांइक पाप मिटावण आवे ॥ बार गुणो वली बांधे ॥ आ० ॥ ९ ॥ एक उठंति आलश मोडे, बीजी उंघे बेठी ॥ नदियोमांथी कांइक नीसरती, जइ दरियामां पेठी ॥ आ० ॥ १० ॥ आइ बाइ नणंद जोजाइ, न्हा

नी महोटी वहुने ॥ सासु सुसरो मा ने मासी, सी खामण वे सहुने ॥ आ० ॥११॥ उदय रतन वाचक उपदेशे, जे नर नारी रहेशे ॥ पोसा मांहें प्रेम धरीने, अविचल लीला लेशे ॥ आ० ॥१२॥

॥ अथ वैराग सज्झाय लिख्यते ॥

ऊंचा मंदिर मालीयां, सोड्य वालीने सूतो ॥ काहाडो काहाडो एने सहु करे, जाणे जनम्योज नोतो ॥ १ ॥ एकरे दिवस एवो आवसे, मने स बलोजी शाले ॥ मंत्री मिल्या सर्वे कारमां, तेनुं कांइ न चाले ॥ एकरे दिवश० ॥ ए आंकणी ॥ साव सोनानारे शांकला, पहेरण नव नवा वागा ॥ धोलुंरे वस्तर एना कर्मनुं, तेतो सोधवा लागा ॥ एकरे० ॥ २ ॥ चरु कढाईया अतीघणा, बीजानुं नही लेखुं ॥ खोखरी हांडी एना करमनी, तेतो आगल देखुं ॥ एकरे० ॥ ३ ॥ केना छोरुने केना वाछेरु, केना मायने बाप ॥ अंतकालें जावुं जीवने एकलुं, साथे पुण्यने पाप ॥ एकरे० ॥ ॥ ४ ॥ सगीरे नारी एनी कामनी, उभी टग टग जूवे, तेनुं पण कांइ चाले नही, बेठी धूसके रूवे ॥ एकरे० ॥५॥ वाल्हाते वाल्हा सुं करो, वालां वो

लावी वलसे, वालांते वनना लाकडां, तेतो साथें जी बसले ॥ एकरे०॥६॥ नही तापी नही तुंबडी, नथी तरवानो आरो ॥ उदयरतन प्रनु इमनणे, मने पार उतारो ॥ एकरे० ॥ ७ ॥

॥ अथ अमल वर्जन सज्झाय लिख्यते ॥

श्रीजिनवाणी मनधरी, सद्गुरु दीये उपदेश ॥ मेरे लाल ॥ बावीश अनक्ष्मां कह्युं, अमल अनक्ष विशेष ॥ मे० ॥ अमल म खाजो साजना ॥ १ ॥ अमल विगोवे तन्न ॥ मे०॥ उंघ बगासा घेरणी, आवे आखो दिन्न ॥ मे० ॥ अ०॥२॥ अमली अमल ने सारखो, आवे आनंद थाय ॥ मे० ॥ उतरतां आरति घणी, धीरज जीव न धराय ॥ मे० ॥ अ० ॥ ३ ॥ आलस ने उजागरो, बेठो ढबका खाय ॥ मे० ॥ अकल न कांइ उपजे, धर्म कथा न सुणाय ॥ मे० ॥ अ० ॥ ४ ॥ काला अहिथी उपनुं, नामे जेह अफीण ॥ मे० ॥ संग करे कीण एहनुं, पण्डित लोक प्रवीण ॥ मे० ॥ अ० ॥ ५ ॥ पहेलुं मुख कडवुं हुए, वली घांटो घेहेराय ॥ मे० ॥ उदर व्यथानिक आफरो, इणथी अवगुण थाय ॥मे०

॥ अ० ॥६॥ नाक बंधाये बोलतां, आधुं वचन बोलाय ॥ मे० ॥ अमीय सुकाये जीभनुं, एहनी खाय बलाय ॥ मे० ॥ अ० ॥७॥ दाढीने मूगं दिसि, उगे नही अंकूर ॥ मे० ॥ काया काली मिसि हुए, गाबडी गालें नूर, ॥ मे० ॥ अ० ॥ ॥ ८ ॥ पलक अवेरुं जो लीए, तो आतम अकुलाए ॥ मे० ॥ नाक चूए नयणां जरे, काम करी न सकाय ॥ मे० ॥ अ० ॥ ९ ॥ अधविच मारगमां पडे, जीवन मृत्य समान ॥ मे० ॥ ॥ हाथ पगानी नस गले, अमलि आवीशान ॥ मे० ॥ अ० ॥ १० ॥ आगराइ आगे कह्यो, मालवी मांहें भेल ॥ मे० ॥ आपइशुं सखरुं नही, मिसरी शुं मन मेल ॥ मे० ॥ अ० ॥ ११ ॥ नवटांक जे नर जीरवे, तसु अहि विप न जणाय ॥ मे० ॥ अमल घणुं खाधा थकी, कंदर्प बल मिट जाय ॥ मे० ॥ अ० ॥ १२ ॥ अमलीने उंन्हु रुचे, थांडुं नावे दाय ॥ मे० ॥ खोभी रोटी खांड घी, उपर दुध सुहाय ॥ मे० ॥ अ० ॥ १३ ॥ कुलवंती जे कामिनी, जाणे जुगति सुजाण ॥ मे० ॥ वस्तु वेची ऋणकरी, अमलीने

दीये आणी ॥ मे० ॥ अ० ॥ १४ ॥ प्रीतम आशा पूरती, न करे रीश लिगार ॥ मे०॥ कथन न लोपें कंतनुं, ते विरली संसार ॥ मे० ॥ अ० ॥ १५ ॥ दुर्भागणी नारी जीका, बोले कर्कश वाण ॥ मे० ॥ रेरे अधम अफीणीयां, आलस वंत अजाण ॥ मे० ॥ अ० ॥ १६ ॥ परणी जाइ पारकी, शुं कीधुं तें धीठ ॥ मे० ॥ पोतानुं पण पेटए, निठुर भरायन नीठ ॥ मे० ॥ अ० ॥ १७ ॥ कान कोट भूषण सहु, वेंची खाधुं तेह ॥ मे० ॥ निर्लज्ज तुज घरवासमां, कहे सुख पाम्युं जेह ॥ मे० ॥ अ० ॥ १८ ॥ अमल समो असगो नहीं, मानो ए मुज सीख ॥ मे० ॥ बाले सुंदर देहनो, अंतें मंगावे भीख ॥ मे० ॥ अ० ॥१९॥ दालिद्रीने दोहेलुं, सूर उग्यानुं शाल ॥ मे० ॥ श्रीमंतने पण नहीं भलुं, जोतां ए जंजाल ॥ मे० ॥ अ० ॥ २० ॥ सासु वहु वढतां वतां, रीसें अमल भखंत ॥ मे० ॥ बालक खाये अजाणतां, जो घर अमल हुवंत ॥ मे० ॥ ॥ अ० ॥ २१ ॥ प्राणीवध जिणशुं हुवे, ते तो तजीयें दूर ॥ मे० ॥ कर्मा दान दशमुं कह्युं, वि

ष व्यापार पंडूर ॥ मे० ॥ अ० ॥ २२ ॥ चतुर विचार ए चित्त धरी, कीजें अमल परिहार ॥ मे० ॥ खिमाविजय पंडित तणु, कहे माणिक मनुहार ॥ मे० ॥ अमल० ॥ २३ ॥ इति ॥

॥ अथ शिखामणनी सज्झाय लिख्यते ॥

श्रीगुरु चरण पसाउलें, कहिशुं सीखामणसार ॥ मन समजावो रे आपणुं, जिमपामो नव पार ॥ १ ॥ कहे जाइ रूडुं तें शुं कह्युं ॥ ए आंकणी ॥ इह नव परनव सुख घणा, लहियें जय जय कार ॥ कहे० ॥ २ ॥ लाख चोरासी योनीयें तुं, नमि पाम्यो नर अवतार ॥ देव गुरु धर्म न उलख्यो, न जप्या मन नवकार ॥ कहे० ॥ ३ ॥ नव मसवाडा उदरें धरयो, पाली पोढो रे कीध ॥ माय ताय सेवा कीधी नही, न्यायें मन नविसिद्ध ॥ कहे० ॥ ४ ॥ चाडी कीधीरे चोतरें, दंडाव्या नला लोक ॥ साधु सहुने संतापिया, आल चढाव्या तें फोक ॥ कहे० ॥ ५ ॥ लोनें लाग्यो रे प्राणीयो. नगणे रातने दीस ॥ हाहो करतां रे एकलो. जइ हाथ घसीस ॥ कहे० ॥ ६ ॥ कपट बल नेद तें करया. नाख्या परना

रे मर्म ॥ साते व्यसनने सेवेया, नवि कीधो जि
नधर्म ॥ कहे० ॥ ७ ॥ क्षमा न कीधी तें खांत
शुं, दया न कीधीरे रेख ॥ परवेदन तें जाणी
नही, तो शुं लीधो तें जेख ॥ क० ॥ ८ ॥ सं
ध्याराग सम आउखुं, जल पंपोटोरे जेम ॥ डा
ज्ज अणी परें बिंदुउ, अथिर संसार छे एम ॥
कहे० ॥ ९ ॥ अनक्ष अनंतकाय वावरयां, पी
धां अणगल नीर ॥ रात्रि जोजन तें करया, किम
पामीस जवतीर ॥ कहे० ॥ १० ॥ दान सीयल
तप जावना, धर्मना चार प्रकार ॥ तेतो जावें
न आदरया, रलीश आनंत संसार ॥ कहे० ॥
॥ ११ ॥ पंचेंद्रीजे पापणी, दुरगति गालेरे जे
ह ॥ ते तो मेलीरे मोकली, किम जाइस शिव गे
ह ॥ कहे० ॥ १२ ॥ क्रोधें वींटयोरे प्राणीयो, मा
न न मूकेरे केड ॥ माया सर्पिणीने संग्रही, लो
जने लीधो तें तेड ॥ कहे० ॥ १३ ॥ पररमणी
रस मोहियो, परनिंदानोरे ढाल ॥ परद्रव्य तें
नवि परिहरयो, परने दीधीरे गाल ॥ कहे०॥१४॥
धर्मनी वेलातुं आलशुं, पापनी वेला उजमाल ॥
संच्यो धन कोइ खायसे, जिम मध माखी महु

आल ॥ कहे० ॥ १५ ॥ मेली मेली मूकी गया, जे उपार्जीरे आथ ॥ संचय कीजेरे पुण्यनो, जिम आवे तुज साथ ॥ कहे० ॥ १६ ॥ शुद्ध देव गुरु उलखी, कीजें समकित शुद्धि ॥ गुरु शीखामण ए सही, ए जाणे हित बुद्धि ॥ कहे० ॥ १७ ॥ गो डीदास संघवी तणे, आदर कीध सज्झाय ॥ श्रीन यविजय उवज्झायनो, रूपविजय गुण गाय ॥ १८ ॥

अथ सामायिकना बत्रीश दोषनी सज्झाय लिख्यते

चोपाईनी देशी ॥ शुभ गुरु चरणें नामीशीश, सामायिकना दोष बत्रीश ॥ कहिशुं त्यां मनना दश दोष, दुशमन देखी धरतो रोष ॥ १ ॥ सा मायिक अविवेकें करे, अर्थ विचार न हियडे धरे ॥ मन उद्वेग इच्छेयश घणो, न करे विनय वडे रा तणो ॥ २ ॥ भय आणे चिंते व्यापार, फ ल संशयनी आणां सार ॥ हिवे वचनना दोष निवार, कुवचन बोले करे टुंकार ॥ ३ ॥ लइ कुंची जा घर उघाड, मुखे लवी करतो वढवाड ॥ आवो जावो बोले गाल, मोहकरी हुलरावे बा ल ॥ ४ ॥ करे विकथाने हास्य अपार, ए दश दोष वचनना वार ॥ काया केरां दूषण बार, च

पलासन जोवे दिशि चार ॥ ५ ॥ सावद्य काम करे संघात, आलस मोडे उंचे हात ॥ पग लांबे वेसे अवनीत, उठिंगण ल्ये थांनो नींत॥६॥ मेल उतारे खुरज खणाय, पगउपर चढावे पाय ॥ अति उघाडुं मेले अंग, ढांके तेम वली अंग उपंग ॥ ७ ॥ निद्रायें रसफल निर्गमे, करहा कंटक तरुए नमें ॥ ए बत्रीशे दोष निवार, सामायिक करजो नर नार ॥ ८ ॥ समता ध्यान घटा उजली, केशरी चोर हुवो केवली ॥ श्रीशुभवीर वचन पालती, स्वर्गे गइ सुलसा रेवती॥९॥

॥अथ दशवैकालिक तृतीयाध्ययन स्वाध्याय॥

पंच महा व्रत पालीए ॥ ए देशी ॥ आधाकर्मी आहार न लीजें, निशि भोजन नवि करीयें ॥ राज्यपिंमने शय्यातरनो, पिंडवली परि हरियें ॥ १ ॥ मुनिवर ए मारग अनुसरीयें, जेम भवजल निधि तरियें ॥ मुनि० ॥ ए आंकणी॥ सामो आण्यो आहार न लीजें, नित्य पिंमनवि आदरियें ॥ शी इछा एम पूछी आपे, ते नवि अंगीकरीयें के ॥ मु० ॥ २ ॥ कंद मूल फल प्रमुख वली, लवणादिक सचित्त ॥ वर्जियें तेम व

ली नवि राखीजें, तेह सन्निध निमित्तके ॥मु०॥
॥ ३ ॥ उवठणुं पीठी परिहारियें, स्नान कदा न
वि करीयें ॥ गंध विलेपन नवि आचरीयें, अं
ग कुसुमसु नविधरीयें के ॥ मु० ॥ ४ ॥ गृस्थनुं
नाजन नवि वावरीयें, परिहरियें वली आनर
ण ॥ ग्राया कारण बत्र न धरीयें, धरे न वान
ही चरणके ॥ मु० ॥ ५ ॥ दातण न करे द
ण न धरे, देखे नवि निज रूप ॥ तेल चोपडीय
न कांकसी न कीजें, दीजें न वस्त्रे धूपके ॥ मु०
॥ ६ ॥ मांचो पलंगें नवि बेसीजें, कीजें न वींज
णे वाय ॥ गृहस्थ गेहें नवि बेसीजें, विण कार
ण समुदायके ॥ मु० ॥ ७ ॥ वमन विरेचन रो
ग चिकित्सा, अग्नि आरंन नविकीजें ॥ सोंगठा
सत्रंज प्रमुखजे क्रीडा, ते पण सवि वर्जीजेंके॥
॥ मु० ॥ ८ ॥ पांच इंद्रिय निजवश आणीजें,
पंचाश्रब पच्चखीजें ॥ पंचसमिति त्रणगुप्ति धरी
ने, बकाय रक्षा ते कीजें के ॥ मु०॥ ९ ॥ उनालें
आतापना लीजें, शीआलें शीत सहीयें ॥ शांत
दांतथइ परिसह सहेवा, थिरवरसाले रहीयें के॥
॥ मु० ॥ १० ॥ एम दुःक्कर करणी बहु करबां,

धरतां नावउदासी ॥ करम खपावी केइ हूआ, शिव रमणी सुविलासीके ॥ मु० ॥ ११ ॥ दश वैकालिक त्रीजे अध्ययने, नाख्यो एहआचार ॥ लानविजय गुरु चरण पसायें, वृद्धिविजय जय कारके ॥ मनिवर० ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ अथ शिखामणनी सज्जाय लिख्यते ॥

पूजा देव गुरु सेवा करणा, कूड कपट परध न परिहरणा ॥ पाले शियलमुख साच उच्चरणां, तो एतेपर एते क्या करणा ॥ १ ॥ धनुष पंच सय उंची काया, लाख चोराशी पूरव आया ॥ प्रथम देवका नाम उच्चरणां ॥ तोए० ॥ २ ॥ मथुरा नगरी नमी जिनराया, उपनी वेदन ख मी न जाया ॥ चूडी खलकत अंगरोष न खपणा ॥ तोए० ॥ ३ ॥ वैरागी श्री जंबुकुमारा, जेणें प्रतिबोधहीं आठे नारा ॥ कोडी नवाणुं धन प रिहरणा ॥ तोए० ॥ ४ ॥ शालिनद्र नोगी सु कुमाला, जेणे तजी बत्रीशे बाला ॥ श्रेणिक आ ए धरम चित्त धरणां ॥ तोए० ॥ ५ ॥ दशार्ण नद्रराजा नये अनिमानी, समोसरणें पोहोतो माहाज्ञानी ॥ सुरपति देख संजम आदरणां ॥

तोए० ॥ ६ ॥ थूलिभद्र कोश्या घररहीत्र्या, सोचि दुक्कर दुक्कर कहीत्र्या ॥ कोश्या प्रति बोधी गुरु संग चलणा ॥ तोए० ॥ ७ ॥ गज सुखमाल काउस्सग्ग वन करणां, सोमल सुसरे अग्नि शिरभरणा ॥ ज्यांलगएक परम सुख व रणा ॥ तोए० ॥ ८ ॥ श्री श्रेयांस कुमर दाता रा, जेणे ऋषभ देवकुं दीध आहारा ॥ होए पं चदिव्य लक्ष्मी घर भरणा ॥ तोए० ॥ ९ ॥ वि जयशेठ विजया घरराणी, दोनुं शियल पक्ष अ तिसारी ॥ जन प्रतिबोधी संजम आदरणां ॥ तोए० ॥ कबजे ले गयो लंकापति, शियल न खंडुं सीता सती ॥ देखत दुष्ट अग्नि जल भरणां ॥ तो० ॥११॥ अपणे रूपका कीया गुमाना, सनत कुमार चक्रवर्ती करी जाणया ॥ देखत तुरत अं ग रोग भरणां ॥ तोए० ॥ १२ ॥ अढार सह समां मोठा सती, नेम प्रशंसा मोठा जति ॥ मो दक चूर रस केवल सुख वरणां ॥ तोए० ॥ १३॥ सूत्र सिद्धांत सुणो रे भाइ, निंदावाद तजोरे प राइ ॥ जिनके महिमा भवोदधि तरणा ॥ तोए० ॥ १४ ॥ जीतके सबही चार कखाया, तिनुशुं

प्रीत कीये पातक जाया ॥ कहत साधारण धर्म चित्त धरणां ॥ तोए० ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ रहनेमिनी सज्झाय लिख्यते ॥

काउसग्ग थकीरे रहनेम, राजुल निहाली ॥ चितडुं चिलउं तव बोले नार रे ॥ देवरिया मुनिवर ॥ ध्यानमां रेजो ॥ ध्यान थकी होये भवनो पार रे ॥ देव० ॥ १ ॥ उत्तम कुलमा यादव कुलरे अजुआली, लीधोछे संयम भार रे ॥ देव० ॥ हुं रे व्रतीरे तुं छे संयम धारी, जासो सर्वे व्रत हारी रे ॥ देव० ॥ २ ॥ विषधर विष वमी आप न लेवे, करे पावक परिचाररे ॥ देव० ॥ तुज रे बांधव नेमजीयें मुजने रे वामी, वम्यो न घटे तुमने आहार रे ॥ देव० ॥ ध्या० ॥ ३ ॥ नारीअछेरे जगमां विषनीरे वेली, नारीछे अवगुणनुं भंडाररे ॥ देव० ॥ नारी मोहेरे मुनिवर जेह विगुता, ते नवि लहे भव पाररे ॥ देव० ॥ ॥ ४ ॥ नारीनुं रूप देखी मुनिने न रहेवुं, एछे आगममां अधिकाररे ॥ देव० ॥ नारी निसंगो ते तो मुनिवर कहीयें, नकरे फिरी संसार रे ॥ देव० ॥ ध्या० ॥ ५ ॥ एरे सतीना मुनिवर वचन सुणी

ने, पाम्या भव प्रतिबोध रे ॥ देव० ॥ नेमजी भेटीने फिरी संयम लीधो, कस्योछे आतम शा द्धरे ॥ देव० ॥ ध्या० ॥ ६ ॥ धन्यरे सतीरे जे णे मुनि प्रतिबोध्या, धन धन ए अणगाररे ॥ देव० ॥ एरे बखतारे मुनिवर वचन सुणीने, फि री नकरे संसार रे ॥ देव० ॥ ध्या० ॥ ७ ॥ इति

॥ अथ आत्महित सज्झाय लिख्यते ॥

माहारुं माहारुं मतकर जीवतुं, जगमां नहीं ताहरुं कोय रे ॥ आप सवारथें सहु मिल्या, हृ दय विचारीने जोयरे ॥ महारुं० ॥ १ ॥ दिन दि न आयु घटे ताहरुं, जिम जल अंजली होयरे ॥ धर्मनी वेला नावे ढूकडो, कवण गति ताहरी होय रे ॥ महारुं० ॥ २ ॥ रमणीशुं रंगें राचे रमे, कांई लीये बावल बाथ रे ॥ तन धन यौ वन थिर नही, परभव नावे तुज साथ रे ॥ महा रुं० ॥ ३ ॥ एक घरे धवल मंगल हुवे, एक घरे रोवे बहु नाररें ॥ एक रामा रमे कंतसुं, एक छोरे सकल सिणगार रे ॥ महारुं० ॥ ४ ॥ एक घर सहु मिली बेसता, नित्य नित्य करता विला सरे ॥ ते रे साजनीउं उठी गयो, थिर न रह्यो ए

क वासरे ॥ महारुं० ॥ ५ ॥ एहवुं सरूप संसा रनुं, चेतो चेतो जीव गमार रे ॥ दश दृष्टांते दोहीलो, पामवो मनुष्य अवतार रे ॥ महारुं० ॥ ६ ॥ हर्ष विजय कहे एहवुं, जे न्नजे जिनपद रंग रे ॥ ते नर नारी वेगें वरे, मुक्ति वधु केरो संग रे ॥ महारुं ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ सेहेजानंदीनी सज्झाय लिख्यते ॥

बीजी असरण न्नावना ॥ ए देशी ॥ सेहेजा नंदी रे आतमां, सुतो कांइ निचिंतरे ॥ मोह तणा रणीया न्नमे, जाग जाग मति वंतरे ॥ लूं टे जगतना जंतरे, नाखी वांक अत्यंतरे, नरका वास ठवंतरे, कोइ विरला उगरंतरे ॥ से०॥१॥ राग द्वेष परिणति न्नजी, माया कपट करायरे॥ काश कुसुम परें जीवडो, फोकट जनम गमाय रे ॥ माथे न्नय जमरायरे, श्यो मन गर्व धरायरे, सहु एक मारग जायरे, कोणजग अमर कहा यरे ॥ से० ॥ २ ॥ रावण सरिखारे राजवी, ना गा चाल्याविण धागरे ॥ दश मायां रण रडव ड्यां, चांच दीए शिर कागरे, देवगया सविन्नाग रे, नरह्यो माननो गगरे, हरि हाथें हरिनागरे,

जोजो न्याइउना रागरे ॥ से० ॥ ३ ॥ केइ चा
ल्या केइ चालशे, केता चालणहाररे ॥ मारग
वहेतो रे नित्य प्रत्यें, जोता लग्न हजाररे ॥ देश
विदेश सधाररे, तेनर एवें संसाररे, जांता ज
म दरबार रे, न जूवे वारकुवाररे ॥ से० ॥ ४ ॥
नारायण पुरी द्वारिकां, बलती मेली निराशरे ॥
रोता रणमां ते एकला, नाठा देव आकाशरे ॥
किहां बरु गया आवासरे, जल जल करीगयो
सासरे, बलभद्र सरोवर पासरे, सुणी पांडव
शिववासरे ॥ से० ॥५॥ राजी गाजीने बोलता,
करतां हुकम हेरानरे ॥ पोढ्या अग्निमां एकला, का
या राख समानरे ॥ ब्रह्मदत्त नरक प्रयाण रे, एऋ
द्धि अथिर निदानरे, जेवुं पींपल पानरे, मत ध
रो जूठ गुमानरे ॥ से० ॥ ६ ॥ वालेसर विना
एकघडी, नवि सोहातुं लिगाररे ॥ ते विना ज
मारो वहीगयो, नहीं कागल समाचाररे ॥ नहीं
कोइ कोइनो संसाररे, स्वारथीयो परिवाररे, मा
ता मरुदेवी साररे, पोहोतां मोक्ष मझाररे ॥
से० ॥ ७ ॥ मात पिता सुत बांधवा, अधिको
राग विचाररे ॥ नारी असारीरे चित्तमां, वंछे वि

षय गमाररे, जुवो सूरिकांता जे नाररे, विखदेती नरताररे, नृप जिन धर्म आधार रे, सज्जन नेह निवाररे ॥ से० ॥ ८ ॥ हसी हसी देतारे ताली थो, शय्या कुसुमनी साररे ॥ ते नर अंतें माटी थया, लोकचणे घरबाररे ॥ घडता पात्र कुंभाररे, एहवुं जाणी असाररे, छोड्यो विषय विकाररे, धन्य तेहनो अवताररे ॥ से० ॥ ९ ॥ थावच्चासुत शिववरया, वली एलाची कुमाररे ॥ धिक धिक विषयारे जीवने, लइ वैराग्य रसालरे ॥ मेहेली मोह जंजालरे, घर रमे केवल बालरे, धन्य करकंडू नृपालरे ॥ से० ॥ १० ॥ श्रीशुभ विजय सुगुरु लही, धर्मरयण धरो छेकरे ॥ वीर वचन रस शेलडी, चाखे चतुर विवेकरे ॥ नगमेते नर भेकरे, धरता धर्मनी टेकरे, भवजल तरिया अनेकरे ॥ सेहेजा० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ जोबनअस्थिरनी सझाय लिख्यते ॥

राग प्रभाती ॥ जोबनीयांनी मोजां फोजां, जाय नगरां देतीरे ॥ घडी घडी घडीयालां वाजे, तोही न जागे तेथीरे ॥ जो० ॥ १ ॥ जरा राक्षसी जोरकरेछे, फेलावे फजेतीरे ॥ आवी-

अवधें उशं के नहीं, लख पतिने लेतीरे ॥ जो० ॥
॥ २ ॥ मालें बेठो मोज करेछे, खांतें जोवे खेतीरे
॥ जमरो नमरो ताणीलेशे, गोफण गोला सें
तीरे ॥ जो० ॥ ३ ॥ जिनराजाने शरणें जाओ,
जोरालो को न जेथीरे ॥ दुनियामां दूजो दीसे
नहीं, आखर तरशो तेथीरे ॥ जो० ॥ ४ ॥ दं
त पड्याने मोसो थयो, काज सर्युं नहीं केथी
रे ॥ उदयरत्न कहे आपें समजो, कहीयें वातो
केतीरे ॥ जोबन० ॥ इति ॥

॥ इति जैन सज्झाय संग्रह समाप्त ॥

जैन धर्म संबंधी छापेला पुस्तकोनुं सूचीपत्र

१ जैन धर्म ग्यान प्रदीपक पुस्तक किमत १॥ रुपया.
२ श्री जैन धर्म सिद्धांत सार पुस्तक किमत १। रुपया.
३ श्री जैन धर्म ज्ञान प्रकाश पुस्तक किमत १२ आणें.
४ श्री रामलक्ष्मण चरित्र कथा युक्त किमत १। रुपया.
५ चंद्रराजाको रास किमत १ रुपया
६ लक्ष्मण बोध नाटक किमत १२ आना
७ श्रीपाल राजाकोरास चार खंडको किमत १० आणें.
८ अंजनाको तथा राणी पद्मावतीको रास किमत ०६ आणें
९ मानतुंग मानवतीकोरास किमत ०६ आणें.
१० हंसराज बछराजको रास किमत ५ आणे.
११ सतधारी राजा हरीचंद्रकी चोपाई किमत ४ आणें.
१२ धन्ना साळभद्र शेठकी चोपाई किमत ४ आणें.
१३ मंगळ कळसकी चोपाई किमत ४ आणें.
१४ देवकी राणीको रास (छ भाइनो रास) किमत ४ आणें
१५ लिलावती राणीकी चोपाई किमत ४ आणें.
१६ अमरसेन जयसेन राजाकी चोपाई किमत ४ आणें.
१७ चंदन मलीयागीरीकी चोपाई किमत ४आणें.
१८ परदेशी राजाको रास किमत ४ आणें.
१९ कयवन्ना शाहको रास किमत ४ आणे.
२० महिपती राजा अने मतिसागर प्रधानकी चोपाई किमत४आणें.
२१ कानड कठीयाराकी चोपाई कर्म बंधन रास किमत ०४आणें
२२ स्नात्र पूजा तथा वीस स्थानकनी पूजा किमत४आणें
२३ स्तवन सझाय संग्रह प्रत्येकभाग किमत ०४ आणें
२४ मेणरहयानी चोपाई किमत ३ आणें.
२५ पांचपदारी मोठी वंदना किमत ३ आणें
२६ पंडित देवचंद्रजी कृत चोवीसी किमत १॥ आना
२७ पंडित आनंदघनजी कृत चोवीसी किमत १॥ आना
२८ श्री जैन धर्म काव्यमाला (आठ भाग) किमत१ रुपया.